IJAER/ September-October-2026/Volume-15/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

मन्नू भण्डारी की कहानियों में व्यक्त सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
संजय गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय चौकिया सुलतानपुर

मन्नू भंडारी की कहानियों में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का विविधतापूर्ण यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है ।इनकी कहानियों में सामाजिक विडंबना, निराशा की भावना, मोहभंगता, भविष्य की चिंता आदि देखने को मिलती है। मनुष्य के जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं आदि का चित्रण भी दृष्टिगोचर होता है। ''समाज में स्थित अमीर वर्ग और ज्यादा अमीर बनता गया और गरीब वर्ग और ज्यादा गरीब बनता गया। इस सामाजिक विषमता का प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ा। मध्यवर्ग न गरीबों के साथ समझौता कर सका, न अमीरो के साथ समझौता कर सका।'' ।[1] सामाजिक कहानियों में समाज के भीतर व्याप्त विभिन्न प्रकार की घटनाओं का चित्रण किया गया है।

'अकेली' नामक कहानी में मन्नू भण्डारी ने सोमा बुआ के माध्यम से एक स्त्री के सामाजिक जीवन का चित्रण किया है। इस कहानी में सोमा बुआ का नौजवान बेटा मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। पुत्र की असामयिक मृत्यु के बाद पुत्र के वियोग में उसके पिता संन्यास धारण कर लिए। फलस्वरूप सोमा बुआ अकेली रह गयीं। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए सोमा बुआ पास – पड़ोस में जाकर लोगों के यहाँ काम करती रहती हैं इन सबके बाद भी सोमा बुआ के पास कोई न कोई उनके अकेलेपन को दूर करने के लिए आ ही जाता है। "बुआ को अपनी जिंदगी पास पड़ोस वालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी किसी के घर मुंडन हो, छठी हो , जनेऊ हो, शादी हो या गमी बुआ पहुंच जाती और फिर छाती पकड़कर काम करतीं, मानो वे दूसरे घर में नहीं , अपने ही घर में काम कर रही हों।''[2]

'सजा' नामक कहानी में एक ऐसे व्यक्ति का चरित्र देखने को मिलता है जो झूठे आरोपों के कारण सामाजिक विद्वेष का शिकार होता है। केवल मिथ्या आरोपों के कारण लोग व्यक्ति विशेष को अपराधी मान लेते हैं, जिसके कारण सम्पूर्ण परिवार को उसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है। यह कहानी सामाजिक दृष्टिकोण एवं भारतीय न्याय व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाती है। इस कहानी में आशा के पिता के आत्मवियोग , व्यथा , मानसिक टूटन की स्थिति का यथार्थ रूप में चित्रण हुआ है। आशा के पिता पर ऑफिस के बीस हजार रुपए के गबन का आरोप है, जिसके लिए कोर्ट के द्वारा उन्हें दंडित भी किया जाता है। कालान्तर में वे हाईकोर्ट से पाँच वर्षों के उपरान्त गबन के अपराध से मुक्त किए जाते हैं। इन बीते पांच वर्षों में आशा के पिता के साथ ही साथ उनका पूरा परिवार आर्थिक संकट का सामना करता है। जो उनके लिए किसी सजा से कम नहीं है।

"बिना अपराध किये ही कानूनी सजा से भी भयंकर सजा सारे परिवार को भुगतनी पड़ती है। यह हमारी न्याय व्यवस्था की विडम्बना ही है।''[3]

इस कहानी में केवल एक पिता के मानसिक रूप से टूटने का दर्द ही नहीं है, बल्कि बेटी एवं पत्नी की पीड़ा भी दिखाई देती है। दोष मुक्त होने की स्थिति में आशा अपने पिता से लिपटकर अपनी प्रसन्नता को दर्शाते हुए कहती है, ''पापा, आप बरी हो गये... आपको.... सजा नहीं हुई।'' यहाँ बरी होने का तात्पर्य बीते पाँच वर्षों से पीड़ा, संत्रास, सामाजिक उपेक्षा आदि से मुक्त होने से है।

'त्रिशंकु' कहानी में मन्नू भण्डारी ने आधुनिक परिवेश को आधार बनाकर जीवन का चित्रण किया है। इस कहानी में दो पीढ़ियों के बीच अन्तर को दर्शाने का सार्थक प्रयत्न किया गया है। नाना, माँ एवं बेटी के आधुनिक परिवेश को दर्शाया गया है। माँ अपनी बेटी तनु की दोस्ती मोहल्ले के बच्चों से करा देती है, कुछ समय बाद स्वयं समाज की दुहाई देकर इस दोस्ती को गलत बताती है। तनु सुबह से लेकर शाम तक घर में मोहल्ले के तीन–चार लड़कों के साथ घिरी रहती है। माँ की किसी सहेली ने कहा तनु तो बड़ी तेज चल रही है। माँ का उत्साह मंद पड़ गया, ''अब तो उन्हें नंगी सच्चाई को झेलना था कि उनकी निहायत ही कच्ची और नाजुक उम्र की लड़की तीन–चार लड़कों के बीच घिरी रहती है और ममी की स्थिति यह थी कि वे न इस स्थिति को पूरी तरह स्वीकार कर पा रहीं थीं और न अपने ही द्वारा बड़े जोश में शुरू किए गए इस सिलसिले को नकार ही पा रही थी।''[4] यह कहानी बुद्धिजीवी वर्ग की पीड़ा नहीं है, बल्कि एक स्त्री के साहस, स्वाभिमान, अंतर्द्वंद्व आदि की पीड़ा है। स्त्री सदा ही मानसिक एवं शारीरिक दोनों रूपों में स्वतंत्र रहना चाहती है, परंतु सामाजिक दृष्टिकोण के कारण स्त्रियों की स्वतन्त्रता खण्डित होती रहती है। तनु किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में समर्थ नहीं है। ममी ने जब स्वंय प्रेम विवाह किया था, तो वह सही था परन्तु जब तनु ने प्रेम विवाह के बारे में सोचा तो वह गलत है। मन्नू भंडारी की कहानियों में मध्यमवर्गीय स्त्री–पुरुष के सामाजिक सम्बन्धों का नैतिक मूल्य नये रूप में दिखायी देता है। कथाकारा ने नारी चरित्रों को लेकर सामाजिक कहानियों को एक नया विजन प्रदान किया है। स्त्रियों की वेदना, बेबसी,लाचारी, सामाजिक बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा आदि इनकी कहानियों में देखने को मिलती है। सामाजिक रूढ़ियों की विषमता एवं जटिलता ने मानव मन को भीतर से खोखला कर दिया है।

'एक कमजोर लड़की की कहानी' में कहानीकार ने रूप नामक लड़की के साहस एवं स्वाभिमान को दर्शाया है। रूप अपने मामा के यहाँ रहकर अपनी पढ़ाई पूर्ण करती है तथा प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण करती है। "आज रूप कालेज में फार्म भरने जाने वाली थी, सवेरे से ही ललित उसे समझा रहा है कि कौन से विषय लेना उसके लिए ठीक रहेगा पर रूप है कि मानती ही नहीं। ललित झल्ला पड़ा, समझती कुछ है नही, किसी से सुन लिया अपनी–अपनी लगाए जा रही है। रूप भी बिगड़ पड़ी–जाओ नहीं समझते हैं तो नहीं सही, पर तुम्हारे विषय कभी नहीं लेंगे, कोई तुम्हारे गुलाम हैं जो हर बात तुम्हारी ही मानें। ''[5]

इसमें मन्नू भंडारी ने रूप को सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक बताया है। वह अपने निर्णय स्वंय ले सकती है वह अपने अच्छे–बुरे के बारे में जानती है। आज यदि देखा जाय तो समाज में रूप के समान बहुत–सी लड़कियाँ देखने को मिलती हैं जो स्वंय अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं, परन्तु

पुरुषवादी समाज अपने अहम के कारण स्त्री को सामाजिक दृष्टिकोण से हीन बना देता है। स्त्री का प्रेम त्याग नहीं मजबूरी बन जाता है। स्त्रियाँ सदैव ही समाज में पुरुष के दोहरे चरित्र का शिकार होती रही हैं। स्त्री समाज में स्वयं को पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों के बीच में पेण्डुलम की भाँति पाती है। आज के समय में भी स्त्रियों की भावनाओं को जानने एवं समझने की अपेक्षा उन्हें शंकाकुल, उपेक्षा आदि की दृष्टि से देखा जाता है।

'मजबूरी' कहानी में मन्नू भण्डारी ने परिवार के स्वार्थ एवं स्त्री के संघर्ष को दर्शाया है। इस कहानी में बूढ़ी अम्मा अपने पोते को पाकर बहुत खुश होती है। यह अपने जीवन के सारे दुःखों को भूलकर अपने पोते बेटू के लिए सब कुछ करना चाहती है। परन्तु बेटू गलत संगत में पड़कर कुमार्गी हो जाता है। दो वर्षों के उपरान्त बेटू को उसकी माँ अपने साथ लेकर चली जाती है। बूढ़ी अम्मा का जीवन पुनः नीरवता एवं विषाद से भर जाता है।

मन्नू भण्डारी ने ''नारी को विभिन्न पारिवारिक रिश्तों और व्यापक सामाजिक सन्दर्भों में अंकित किया है। उनके यहाँ दादी, माँ, बुआ, बहन, पत्नी, पुत्री और प्रिया आदि स्त्री के विविध रूप मिलते हैं। वे अनुभव करती हैं कि आज स्त्री सब कहीं मिसफिट है, क्योंकि उसका विकास समाज के स्वस्थ संदर्भ में न होकर अभी तक एक समस्या के रूप में हुआ है। लेकिन नारी कोई थ्योरम का प्रॉब्लम नहीं है। इसी कारण वे नारी को पूरे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती हैं।''[6]

इस प्रकार हम देखते हैं कि मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में समाज का स्त्री के प्रति सम्मान, द्वेष, मनोविकार आदि उभरकर सामने आता है। इनकी कहानियों में सामाजिक समस्याओं के रूप में नारी के अंतर्द्वंद्व, पुरुषों के द्वारा आहत की गयी भावनाएं स्वाभाविक रूप से परिलक्षित होती हैं। मनुष्य ने सदैव ही स्त्रियों को स्वयं से कम महत्व दिया, किन्तु आज के सामाजिक परिवेश में वे सशक्त होकर सामने आ रही हैं।

मन्नू भण्डारी की कहानियों में राजनीतिक यथार्थ की अभिव्यक्ति भी हुई है ।वर्तमान परिवेश में राजनीतिक स्तर पर गिरावट देखने को मिल रही है,जो कि देश व समाज के लिए अत्यंत हानिकर है।

भ्रष्ट नेताओं की स्वार्थपूर्ण राजनीति ने समाज में साम्प्रदायिकता और जातिवाद का विष घोल दिया है ,जिससे जनमानस में आपसी संघर्ष दिखाई देता है। मन्नू भंडारी ने अपनी कई कहानियों में राजनीतिक समस्याओं को प्रमुखता उठाया है। उनकी कहानी तीसरा हिस्सा ,यही सच है, मैं हार गई आदि में राजनीतिक यथार्थ दिखाई देता है।

'तीसरा हिस्सा' कहानी में राजनीतिक व्यंग्य देखने को मिलता है। इसमें चित्रित किया गया है ,कि चुनावी समय में नेतागण बड़े–बड़े वायदे करते हैं और सत्तासीन होने के उपरांत जनमानस की समस्याओं को विस्मृत कर देते है। यह परंपरा हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बन गई है। जनता इतनी सरल है कि नेताओं के बहकावे में आकर पुनः उन्हीं को वोट देकर सत्ता की बागडोर उनके हाथ में दे देती है। नेतागण किस प्रकार से प्रिंट मीडिया को अपने हितानुसार इस्तेमाल करते हैं। यदि कोई व्यक्ति नेता की गलत नीतियों , कृत्यों की आलोचना करता है, आवाज उठाता है तो मीडिया नेताओं के पक्ष में अपना कार्य करती है। सन 1962 ई. के चुनाव में शेरा बाबू सरकारी नौकरी छोड़कर पाक्षिक पत्रिका निकालने लगते हैं ,जो धनाभाव के कारण मात्र 12 अंकों तक ही प्रकाशित हो पायी ,जबकि पत्रिका का स्वर मुखर था।

'एक बार तो इन्होंने जोर से बोलकर भी देख लिया। नही, आवाज में कड़क है। आखिर जाएगी कहाँ? इस आवाज के सामने न उसकी टांगें थरथरा जाएं तो! और क्षणांश को उनकी आंखों के आगे वह दृश्य क्रौंध गया, जब भरी सभा में उन्होंने नेहरू सरकार की धज्जियाँ बिखेर कर रख दी थी। क्या बुलंदी थी आवाज म? अपने को ही भाषण देते देखकर एक हल्की सी मुग्ध मुस्कान उसके होंठों पर थिरक गई।''[7]

शेरा बाबू का व्यक्तित्व ईमानदारी से परिपूर्ण था वह जिस समाचार पत्र का प्रकाशन कर रहे थे ,उसमें सामाजिक व राजनीतिक जीवन का यथार्थ व्यक्त होता था। शेरा बाबू के व्यक्तित्व के माध्यम से भंडारी जी ने प्रिंट मीडिया पर तीखा व्यंग्य किया है, कि किस प्रकार समाचार पत्र वाले झूठी कहानियाँ बनाकर राजनेताओं को लाभान्वित करते हैं और स्वयं भी लाभ उठाते हैं।

शेरा बाबू अपने बंद हो गए समाचार पत्र को पुनःप्रकाशित करने का निर्णय लेते हैं और राजनीति के भ्रष्ट चरित्र को समाज के सम्मुख लाने का प्रयास करते हैं। ''देश का नया जन्मा भ्रष्ट नौकरशाही का अंत! ऊँचे ओहदों पर पहुँचने के लिए दो ही लियाकत होनी चाहिए औरत में, बड़े बाप की बेटी, या अफसर संग लेटी।''[8]

देश में राजनेता और नौकरशाही की मिली भगत से आम जनमानस को बेरोजगारी जैसी समस्या से जूझना पड़ रहा है। शेरा बाबू संपादक के दबाव में आकर काम नहीं कर पाते थे ,इसलिए वह नौकरी भी नहीं कर पा रहे थे। वे संपादकीय में भ्रष्ट राजनेताओं का यशोगान करना अपराध समझते थे। ''उन्होंने दिमाग से घर को परे सटकाया और एक साप्ताहिक खोल लिया। जनता पार्टी के मंत्रियों की तस्वीरें उनकी जीवनियाँ उसके इंटरव्यूज उनकी प्रशंसा–प्रशस्ति। लानत है इन संपादकों पर! दोगले और बेपेंदी के! अच्छा है बेटा, तुम यही करो। जो शक्तिमान बैठा है उसके चरण चाँपों और अपनी सात पुश्तों को तार लेने का सिलसिला बिठा लो ! अरे कम से कम करके चरण थकने तो देते इनके फिर चंपाते।''[9]

चुनाव जीतने के बाद जब कोई नेता मंत्री–पद धारण करता है, तो संपादकगण नेता जी का यशोगान अपने समाचार पत्र में करने लगते हैं। शेरा बाबू को ऐसे संपादकों से चिढ़ थी । शेरा बाबू जिस समाचार पत्र में काम करते थे। उसके संपादक मल्होत्रा ने अवकाश के दिन एक नेता के स्वागत में जाने के लिए सबको आदेश दिया था,पर शेरा बाबू स्वागत के लिए नहीं गये। ''चार बजे ऑफिस पहुँचना है, पर मल्होत्रा और उस सारे माहौल का ख्याल आते ही मन में भारी कोफ्त उठी– कौन जाए स्याले उन जनखों की टोली में। मंत्री महोदय के सामने तालियाँ बजा बजाकर नाचना ही तो है। ऐसी की तैसी।''[10]

इस प्रकार यह कहानी " अस्तित्व के लिए सारे विवश समझौतों के बावजूद ऐसा कुछ खास अपने लिए बचाए रखने की इच्छा का प्रतीक है जिसे पत्नी या बॉस कोई भी छू नहीं सकता।"[11]

'यही सच है' कहानी में मन्नू भंडारी ने नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने का प्रयास किया है।नेता एवं अफसर सरकारी नौकरियों पर निगाह गड़ाए ही रहते हैं, सबसे पहले वे अपने घर–परिवार और निकट संबंधियों को अवैध ढंग से नौकरी दिलवाते हैं। बाद में मनचाहे स्थान पर स्थानांतरण भी करवा देते हैं। ये नेतागण किसी योग्य प्रतियोगी के लिए अवरोधक का कार्य करते हैं।

दीपा साक्षात्कार हेतु कलकत्ता जाती है तो उससे संजय ने कहा, ''आजकल ये इंटरव्यू आदि सब दिखावा मात्र होते हैं वहाँ किसी जान–पहचान वाले से इंफ्लुएंस डलवाना जाकर।''[12]

दीपा कलकत्ता में साक्षात्कार देने के बाद सोचती है कि यह नौकरी उसे
सहजता से प्राप्त हो जाएगी,किंतु जब वह वास्तविकता से अवगत होती है,तो कहती कि ''नौकरी पाना इतना मुश्किल है, इसका मुझे अनुमान नहीं था। इरा कहती है कि डेढ़ सौ की सरकारी नौकरी के लिए खुद मिनिस्टर तक सिफारिश करने पहुँच जाते हैं फिर यह तो तीन सौ का जॉब है।''[13]

'मैं हार गई' कहानी में लेखिका ने राजनीति को केवल सत्ता और चुनाव की राजनीति के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्ति के जीवन, सामाजिक संबंधों और नैतिक मूल्यों को प्रभावित करने वाली व्यवस्था के रूप में देखा है। कहानी में राजनीतिक वातावरण के माध्यम से यह दिखाया गया है कि सत्ता और स्वार्थ किस प्रकार मानवीय संवेदनाओं तथा आदर्शों को कमजोर कर देते हैं। यह कहानी राजनेताओं की पीढ़ियों में व्याप्त राजनीतिक द्वंद्व को भी दर्शाती है। नेताओं की संतानें नेतागिरी में ही अपने चमकदार भविष्य का स्वप्न देखने में लगी रहती हैं, इसका कारण यह है कि राजनीति में न तो सुशिक्षित होने की अनिवार्यता है और न ही व्यक्तित्व निर्माण की ही शर्त है।

लेखिका नेता–पुत्र के छद्म चरित्र को दिखाते हुई लिखती है कि ''बेटा आता है और सबसे पहले अभिनेत्री की तस्वीर को उठाता है, उसकी बाँछे खिल जाती है। बड़ी हसरत से उसे वह सीने से लगाता है, चूमता है और रख देता है। उसके बाद शराब की बोतल से दो चार घूँट पीता है। थोड़ी देर बाद मुँह पर अत्यंत गंभीरता के भाव लाकर, बगल में गीता दबाये बाहर निकालता है। बाप बेटे की यह करतूत देखकर उसके भविष्य की घोषणा करता है। यह साला तो आजकल का नेता बनेगा।''[14]

यहाँ पर मन्नू भंडारी ने देश की वर्तमान राजनीति पर करारा व्यंग्य किया है। पिता जब अपने पुत्र के धूर्ततापूर्ण चरित्र को देखता है ,तो उसे यह विश्वास हो जाता है कि उसका पुत्र नेता ही बनेगा।

कहानी लेखिका नायिका विपन्न और संपन्न दोनों ही वर्गों से अपने नायक के व्यक्तित्व निर्माण में सफल नहीं हो पाती है, हालांकि उसने एक आदर्श नेता बनने के लिए कहानी की रचना की थी, किन्तु नेता बनने हेतु आवश्यक गुण उसके नायक में विद्यमान नहीं थे। अतंतः लेखिका नेता का चरित्र निर्माण नहीं कर पाती है और हार जाती है।

"शीर्षक से संकेतित इस कथा लेखिका की पराजय की स्वीकृति यह स्पष्ट देती कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में उनके नियामकों से कोई आशा नहीं की जा सकती।"[15]

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. मन्नू भण्डारी की कहानियों में आधुनिकता बोध – उमा गुरुपादप्पा केवल राम, पृष्ठ सं. 22 चन्द्रलोक प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर, 1997

2.मन्नू भण्डारी – 21 सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (अकेली) डायमण्ड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली 2015 पृष्ठ सं. 7

3. उपरोक्त (सजा) पृष्ठ सं. 72

4. उपरोक्त (त्रिशंकु) पृष्ठ सं. 23

5. उपरोक्त (एक कमजोर लड़की की कहानी) पृष्ठ–45

6. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश, पृष्ठ–110
सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद ,ग्यारहवाँ संस्करण 2022
7. मन्नू भंडारी की 21 सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (तीसरा हिस्सा) – पृष्ठ सं.140
8.उपरोक्त, पृष्ठ0 सं. 142
9 .उपरोक्त, पृष्ठ सं.144
10. उपरोक्त, पृष्ठ सं.151
11. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश, पृष्ठ सं.109
12. मन्नू भंडारी की 21 सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (यही सच है) ,पृष्ठ सं.154
13. उपरोक्त, पृष्ठ सं.159
14. मन्नू भंडारी की 21 सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (मैं हार गई) ,पृष्ठ सं.225
15. हिन्दी कहानी का विकास– मधुरेश, पृष्ठ सं.109